Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details

Barcode 11444794

Roll No. 23261028043

Total Mark 56/75.00

Exam BA_V_ODD_EXAM_NOV_2025

Subject A050501T - Nationalism in India.

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	3/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	3/5						
1I	4/5						
2	11/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	11/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam 20/11/25 Shift III Roll No. 22
Paper Code A05050IT Subject History Year/Sem 5th
Name of Candidate Devansh Pandey
Roll No. 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

Signature of Candidate: Devansh Pandey
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A 0 5 0 5 0 1 T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: Nationalism in India
Session: 2025-26 Year/Semester: 5th
Subject: History (Nationalism in India)

Paper Code
A 0 5 0 5 0 1 T

Exam Date
2 0 1 1 2 0 2 5

Name of Candidate
DEVANSH PANDEY

Father's Name
SATYAPRAKASHPANDEY

महाविद्यालय का कोड
College Code
K N 0 4

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code
K N 0 4

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
नियमित Regular ● / भूतपूर्व छात्र Ex. Student ○
व्यक्तिगत Private ○ / Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
11444794

A 0 5 0 5 0 1 T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या
Enrollment Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 0 4 5 1 7

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

पेपर कोड Paper Code
A 0 5 0 5 0 1 T

Signature of Candidate: Devansh Pandey
Signature of Invigilator
C.S Facsimile
COE Facsimile

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ◎

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाइल, डिजिटल डायरी, कॉपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती हैं। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृ (1–24) से कम है या फटे हुए हैं, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उ पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्र में कोई त्रुटि है तो उसको परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर क निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा क कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damag in your answer script, if found than change the answer scri immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e. Subject Code, Subject Name and Question of the Questio Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement o the exam, so that it can be corrected in TIME. After that n corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over pape should fill in status as Carry Over. Those appearing as E Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three column

Paper Code A05050 11 — 01

Do Not Write anything in this Portion

Section-'A'

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (a)

1857 के संग्राम में डलहौजी का उत्तरदायित्व-

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रथम चिंगारी उत्पन्न करने वाला 1857 का संग्राम अनेकों कारणों का परिणाम था। इस संग्राम में डलहौजी ने भी उत्तरदायी कारणों की भूमिका निभाई। जिसके द्वारा उठाए गए कदम तथा उसकी नीतियां अवश्य ही 1848 से 1856 के बीच विद्रोहात्मक परिणाम उत्पन्न करते वाले रहे। इन्हें निम्न रूप में समझा जा सकता है -

→ डलहौजी की डाक्ट्रिन ऑफ लैप्स (राज्य हड़प नीति) -

डलहौजी एक साम्राज्यवादी शासक था जिसने भारतीय राज्यों को विभिन्न भागों में विभाजित करा जिनमें एक वह राज्य भी थे जिनके राजा के कोई उत्तराधिकारी नहीं था। उसने ऐसे राज्यों को हड़पने का प्रयास किया इसी क्रम में उसने सतारा, जैतपुर, सम्बलपुर, बघाट, झाँसी आदि राज्यों को मिलाकर भारतीयों में विद्रोह की आग भड़का दी।

→ आर्थिक शोषण -

डलहौजी द्वारा किये जा रहे आर्थिक शोषण ने भी 1857 के संग्राम में महती भूमिका निभाई

Paper Code A 0 5 0 5 0 1 7 02

उदा० के लिए उसने रेलवे, डाक, तार-संचार का निर्माण कराया जिसके लिए भारतीय उपनिवेश से बड़ी आर्थिक पूंजी का शोषण किया।

सामाजिक नीति -

डलहौजी ने न केवल आर्थिक बल्कि समाज में अव्यवस्था, कुरीतियों (ताकि आर्थिक धन शोषण हो) को भी आगे बढ़ाया।

इस प्रकार डलहौजी की नीतियां तथा कार्यक्रम 1857 के संग्राम को आगे बढ़ाने में उत्तरदायी रूप से उभर कर आए।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 1(b)

1857 संग्राम का तात्कालिक कारण -

1857 का तात्कालिक कारण मुख्य रूप से सैनिकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले कारतूसों में गाय तथा सुअरों की चर्बी का लगा होना माना जाता है।

वस्तुतः 1857 के विद्रोह में विभिन्न सैनिकों की रेजीमेंट ने प्रमुख भूमिका निभाई जिसमें मेरठ में सैनिकों द्वारा प्रयोग की जाने वाले, जिन्हें मुंह से खोला जाता था उस पर गाय तथा सुअरों की चर्बी लगी हुई थी इसलिए सैनिकों ने इसका विद्रोह

Do Not Write anything in this Portion

किया। चूंकि भारत में मुस्लिम और हिंदू दोनों निवास करते थे जिन्होंने समान्वित संस्कृति के रूप में एक साथ विकास किया था परंतु ब्रिटिश द्वारा इस प्रकार के कुकृत्य के कारण दोनों में असंतोष व्याप्त हो गया।

परंतु इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि केवल तात्कालिक कारण ही नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीति तत्कालीन परिदृश्य ने भी उतनी ही भूमिका निभाई जितनी तात्कालिक कारणों की भूमिका रही। उदा० के लिए ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा किया सामाजिक शोषण, आर्थिक शोषण (करों में वृद्धि) आदि भी निर्णायक कारण रहे।

इस प्रकार तात्कालिक कारणों के साथ अन्य कारणों ने भी 1857 के संग्राम में महती भूमिका निभाई।

प्रश्नोत्तर क्रमांक -: 1(c)

राष्ट्रवाद :-

राष्ट्रवाद मुख्यत: एक भावनात्मक शब्द है जहाँ राष्ट्र एक निश्चित भू-भाग, उस भू-भाग की सरकार, उस भू-भाग में देश की संप्रभुता तथा भूभाग में रहने वाले लोगों को सम्मिलित रूप में प्रदर्शित करता है वहीं राष्ट्रवाद को निम्न लिखित रूप में समझा जा सकता है-

"किसी भू-भाग में रहने वाले वे लोग जिनकी पृष्ठभूमि एक ही भौतिक तथा ऐतिहासिक

पृष्ठभूमि से संबंधित हो तथा उनके भीतर एक ही समान सांस्कृतिक विरासत हो तथा आपसी आत्मीयता का भाव हो, राष्ट्रवाद कहलाता है।

अतः राष्ट्रवाद केवल राष्ट्र के प्रति प्रेम को और राष्ट्र की सेवा मात्र को नहीं दर्शाता बल्कि यह उस भू-दृश्य में लोगों की समानता, एकता तथा बंधुत्व को भी दर्शाता है।

राष्ट्रवाद की परिभाषा को विभिन्न इतिहासकारों द्वारा अलग-अलग रूप में प्रस्तुत किया गया है जहाँ राष्ट्रवादी इतिहासकार इसे राष्ट्र के प्रति प्रेम मात्र से संदर्भित करते हैं वहीं मार्क्सवादी इतिहासकार इस राष्ट्रवाद में आर्थिक गुणों की भी खोज का सप्रयत्न प्रयास करते हैं साथ ही कैम्ब्रिज इतिहासकार इसे ब्रिटिश की नीतियों और कार्यक्रमों से जोड़ते हैं।

इस प्रकार राष्ट्रवाद अपने राष्ट्र के प्रति सौहार्द, प्रेम, आत्मीयता तथा बंधुत्व की भावना की झलक देता है। तथा राष्ट्र की संस्कृति के साथ-साथ एक समान ऐतिहासिक विरासत को भी प्रदर्शित करता है। इसे भावनात्मकता के करीब ही ज्यादा माना जाता है बजाए भौतिक और आर्थिक कारकों के।

Paper Code A 0 5 0 5 0 1 T   05

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 1 (d)

सुरक्षा वाल्व का सिद्धांत-

कांग्रेस की स्थापना 1885 ई० में गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में दिसंबर में हुई थी आरंभ में यह उदारवादियों द्वारा या नरमपंथी द्वारा संचालित हुई परंतु बाद में इस पर उग्रपंथियों का प्रभाव पड़ा। इन्हीं उग्रपंथियों में एक प्रमुख नाम लाला लाजपत राय का भी था जिन्होंने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया था इस सिद्धांत के अनुसार,

लाला लाजपत राय का मानना था कि यह कांग्रेस की स्थापना ब्रिटिश की चाल परिणाम है जिसने सेवानिवृत्त ब्रिटिश अधिकारी A.O. ह्यूम की सहायता से इस कांग्रेस की स्थापना करवाई तथा उसके द्वारा किसी बड़े विद्रोह को होने से रोकने का पूर्णतः प्रयत्न किया।

चूंकि 24-25 वर्षों पूर्व हुआ 1857 का विद्रोह पुनः न हो पाये इसलिए ब्रिटिश द्वारा यह पूर्णतः विश्वास किया गया कि भारतीय अपनी मांगे संवैधानिक रूप में ब्रिटिश के समक्ष उपस्थित करें तथा ब्रिटिश अधिकारी उनकी मांगों को पूरा करेंगे।

परंतु, आधुनिक खोजों के अनुसार इस सिद्धांत की प्रासंगिकता ज्यादा सिद्ध नहीं है क्योंकि कांग्रेस ही एक अखिल भारतीय संस्था थी जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक प्रमुख संस्था की भूमिका निभाई।

Paper Code: A D 5 0 5 0 1 7

इस प्रकार सेफ्टी वाल्व का सिद्धांत ब्रिटिश के हितों में कांग्रेस के जन्म को बताता है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 1(e)

राजा राममोहन राय -

राजा राममोहन एक प्रसिद्ध चिंतक के रूप में भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध हैं उनके द्वारा विभिन्न प्रयासों यथा सती प्रथा पर रोक तथा आर्य समाज की स्थापना के द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अहम भूमिका निभाई। इन्हें भारतीय पुनर्जागरण तथा राष्ट्रवाद के प्रवर्तक के रूप में भी जाना जाता है-

भारतीय पुनर्जागरण एवं राष्ट्रवाद के प्रवर्तक -:

राजा राममोहन राय ने भारतीय साहित्य के साथ-साथ पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन अध्यापन पर भी जोर दिया। इन्होंने आर्य समाज की स्थापना करवाई तथा इसके द्वारा वे भारतीय समाज में रूढ़िवादिता का विरोध तथा आधुनिक विचारों का प्रवेश कराने में सफल रहे। इन्होंने आर्य समाज के माध्यम से कई विवाह भी करवाये तथा आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया

Do Not Write anything in this Portion

सती प्रथा का अंत -

1829 में राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के अंत में सहयोग देकर भी भारतीय समाज तथा महिलाओं के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाई।

फिर यही नहीं इनके द्वारा पाश्चात्य विचारों को ग्रहण करने पर भी जोर दिया गया ताकि भारतीय भी ब्रिटिश अधिकारियों का आगे बढ़कर विरोध कर सकें तथा उनकी नीतियों को समाप्त करवा सकें।

इस प्रकार राजा राममोहन राय ने न केवल सामाजिक रूप से बल्कि आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान के माध्यम से भी भारतीयों में पुनर्जागरण के प्रति नवीन चेतना लायी तथा राष्ट्रवाद रूपी भावनात्मक सिद्धांतों को आनुप्रायोगिक रूप में लागू करवाया।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1 (f)

बाल-गंगाधर तिलक का भा॰रा॰आं॰ में योगदान -

बाल गंगाधर तिलक को भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में एक प्रमुख राष्ट्रवादी का दर्जा प्राप्त है क्योंकि इन्होंने अपनी होमरूल लीग के माध्यम से राष्ट्र की केवल रक्षा ही नहीं

Do Not Write anything in this Portion

की बल्कि प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों की भूमिका को भी प्रदर्शित किया इनके द्वारा उठाए गए कदम तथा नीतियाँ भारतीयों की राजनीतिक चेतना में उग्रवादी प्रभाव उत्पन्न कर देती हैं। इनके योगदान को निम्न रूप में समझा जा सकता है-

उग्रवादी विचारक – बाल गंगाधर तिलक उग्रवादी विचारकों के त्रयी लाल-बाल-पाल के श्रेणी में आते हैं जिन्होंने स्वदेशी-बहिष्कार-राष्ट्रीय शिक्षा के माध्यम से भारतीयों में एक नवीन चेतना जाग्रत की। इन्हें सूरत की फूट में जेल भी भेजा गया।

होम रूल लीग – बाल गंगाधर तिलक मांडले जेल से बाहर आने के पश्चात होम रूल लीग के गठन में जुट गए जिसके द्वारा इन्होंने एनी बेसेंट के साथ मिलकर प्रथम विश्व युद्ध में जाने वाले सैनिकों के साथ होने वाले नरसंहार को प्रदर्शित कर ब्रिटिश अधिकारियों का जमकर विरोध किया।

स्वदेशी-बहिष्कार – राष्ट्रीय शिक्षा का प्रयोग –

तिलक ने स्वदेशी-बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देकर भारतीय आर्थिक जड़ को मजबूत किया तथा उसमें भारतीयों की भूमिका को लाकर

Do Not Write anything in this Portion

ब्रिटिश का विरोध भी किया।

इस प्रकार बाल गंगाधर तिलक भारतीय इतिहास में अविस्मरणीय योगदान देने वाले राष्ट्रभक्त थे।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (g)

1906 में सलीमुल्ला खाँ की सहायता (इन्होंने प्रस्ताव दिया था) तथा वकार-उल-मुल्क की अध्यक्षता में मुस्लिम लीग का गठन किया था। जिसमें ब्रिटिश की सफलता यह थी कि प्रथमतः बंगाल विभाजन तथा द्वितीय मुस्लिम लीग का गठन उनकी फूट डालो और राज करो की नीति को बढ़ावा देना-

लीग के उद्देश्य-

मुख्यतः लीग के एक त्याजे आगा खाँ ने भी अपनी माँगों को वायसराय के समक्ष प्रस्तुत किया था तथा अपने उद्देश्यों को परिलाक्षित किया था:-

① मुस्लिमों को एक पृथक निर्वाचन व्यवस्था दी जाए ताकि उन्हें भी हिंदुओं के समान प्रतिनिधित्व मिल सके।

② मुस्लिमों को सरकारी अनुदान प्राप्त करवाना ताकि विश्वविद्यालयों के निर्माणों में वृद्धि हो

③ मुस्लिमों को वायसराय की कांउसिल में यथा रूप से स्थान प्राप्त हो जैसे कांग्रेस के सदस्यों को प्राप्त।

④ विधायिकाओंमें भी मुस्लिमों को समान रूप से सीटें प्राप्त हों।

⑤ सरकारी नौकरियों में भी मुस्लिमों को आरक्षण प्राप्त हो सके ताकि वे भी आगे नौकरियों में हिस्सा ले सकें।

⑥ आरंभिक अवस्था में मुस्लिम लीग कांग्रेस के विरोध में रही यतः उसने 1909 में पृथक निर्वाचन भी प्राप्त कर लिया।

⑦ मुस्लिम लीग ने सांप्रदायिकता को भी जन्म दिया जिसने आगे चलकर भारत-विभाजन को प्रोत्साहित किया।

इस प्रकार मुस्लिम लीग ने राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी भूमिका को सांप्रदायिकता की परिधि में ला दिया तथा अपने उद्देश्यों को मनवाकर भारत ~~विभाज~~ विभाजन करवाकर एक नये राष्ट्र पाकिस्तान की नींव डाली जिसने कई दंगे (प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस) उत्पन्न किए।

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1(ङ)

होमरूल आंदोलन में एनी बेसेंट का योगदान -

एनी बेसेंट एक आयरिश महिला थी जिन्होंने होमरूल लीग जोकि 1916 में गठित की गई, को भी आयरिश मॉडल पर ही गठित किया। इन्होंने न केवल भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन एवं धर्म सुधार आंदोलन में भूमिका निभाई बल्कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भी होम रूल लीग के द्वारा अपनी प्रस्तुति दर्ज की।

होम रूल लीग का प्राथमिक उद्देश्य 'स्वशासन' की प्राप्ति था। चूंकि ये विदेशी महिला थी इसलिए इन्होंने बाल गंगाधर तिलक द्वारा बनायी लीग के साथ मिलकर काम किया तथा ब्रिटिशों के विरुद्ध आवाज उठाई। इनके योगदान को इस रूप में भी देखा जा सकता है कि 1916 में लखनऊ समझौता में उदारपंथियों - उग्रवादियों को मिलाने में भी इन्होंने अपना योगदान दिया।

फिर होमरूल लीग में एनी बेसेंट ने 1909 में पारित होने वाले एक्ट का भी विरोध किया था क्योंकि वे भारतीय विभाजन का कारण पृथक निर्वाचन के पक्षधर नहीं थी। इसलिए उन्होंने इसे भी खारिज माना न

Do Not Write anything in this Portion

तथा ब्रिटिशों के Ist World war में होने वाले नरसंहार का विरोध भी किया।

अतएव एनी बेसेंट ने भारतीय न होकर भी एक भारतीय शासिका के रूप में भूमिका निभाई तथा राष्ट्रीय आंदोलन को आगे बढ़ाया।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (i)

उदारवादियों के उद्देश्य एवं कार्य-

कांग्रेस की स्थापना के साथ ही कांग्रेस पर जिस समूह का वर्चस्व रहा उसे उदारवादी समूह के नाम से भी जाना जाता है। इसी संदर्भ में इनके उद्देश्य को एवं कार्य निम्न रूप में देख सकते हैं-

1. ब्रिटिशों के प्रति निष्ठा
2. ब्रिटिश की न्यायप्रियता में विश्वास
3. क्रमिक सुधारों में विश्वास
4. नैतिक रूप से मांगों को रखना
5. संवैधानिकता का पालन
6. अहिंसा का प्रयोग

इसी प्रकार इसके अगले चरण के रूप में हम उग्रवादी चरण को देखते हैं-

Do Not Write anything in this Margin

उग्रवादियों के उद्देश्य एवं कार्य -

उग्रवादी दल की प्रमुखता यह थी कि इसने उदारवादियों का सदैव से ही विरोध किया तथा अपनी नीतियों को हिंसा से जोड़ने का प्रयास किया इनके उद्देश्य एवं कार्य निम्न हैं -

① स्वदेशी का प्रयोग
② बहिष्कार की पद्धति को अपनाना
③ हिंसा का प्रयोग
④ ब्रिटिश की नीतियों का प्रयोग
⑤ भारतीय संस्कृति में विश्वास
⑥ राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में उदारवादियों एवं उग्रवादियों ने अपने - अपने उद्देश्यों एवं कार्यों के द्वारा भारतीय स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाया।

P.T.O

Section - 'B'

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 2

1857 का संग्राम -

1857 का संग्राम, जिसे प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ने अपनी शुरुआत मेरठ के विद्रोह से प्रारंभ की और यह विभिन्न क्षेत्रों से होता हुआ बिहार के जगदीशपुर तथा आगे भी बढ़ा। इसके स्वरूप के संदर्भ में विभिन्न इतिहासकार एवं विचारक पृथक-पृथक मत रखते हैं जिसे हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं -

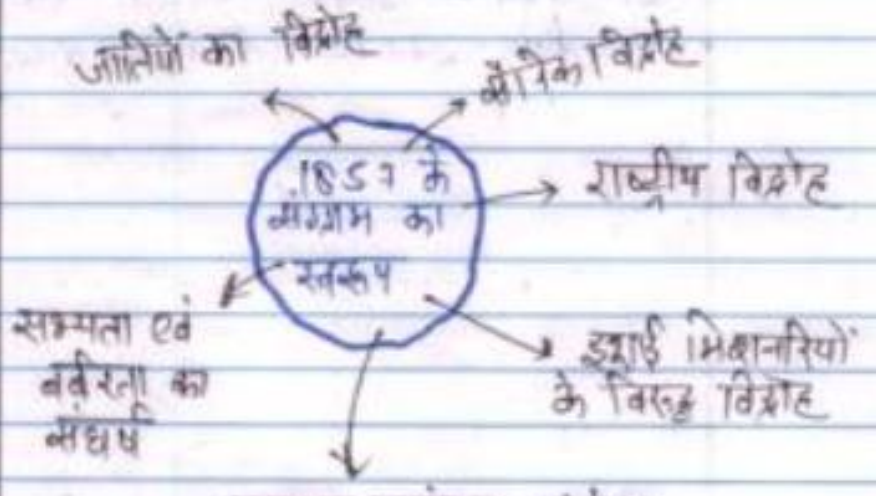

अतएव विभिन्न इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत मत निम्नलिखित हैं -

सैनिक विद्रोह -

एक प्रसिद्ध विद्वान जॉन लारेंस ने इस 1857 के विद्रोह को सैनिक विद्रोह घोषित कर दिया है क्योंकि उनका मानना है कि यह युद्ध केवल सैनिकों मुख्यतः भारतीय सैनिकों एवं ब्रिटिश सैनिकों के मध्य लड़ा गया युद्ध था। उनका यह विचार अवश्य ही ब्रिटिश हित के रूप में प्रभावित होगा क्योंकि सैनिक विद्रोह कहना मात्र ही ब्रिटिश पक्ष को प्रदर्शित कर रहा है।

ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध विद्रोह -

विद्वान टी० आर० रीज० इस स्वतंत्रता संग्राम को ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध लड़ा गया युद्ध घोषित करते हैं क्योंकि 1813 के एक्ट के पश्चात इन मिशनरियों के लिए रास्ता खोल दिया गया था जिन्होंने भारत में पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार कर भारतीय रूढ़िवादिता पर चोट की।

इसी प्रयत्नों से भारतीयों में उनके प्रति रोष जाग गया और इस रोष की पुष्टि 1857 के विद्रोह ने की। फिर यही नहीं ईसाई मिशनरी भी एक बार को इस विद्रोह से भयभीत अवश्य हुए।

Do Not Write anything in this Portion

सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष-

एक अन्य प्रसिद्ध विद्वान T.R. होम्स इस संग्राम को सभ्यता एवं बर्बरता के मध्यता संघर्ष घोषित करते हैं। यहीं नहीं ब्रिटिश भी 'White man burdan theory' के द्वारा भारतीयों को बर्बर सिद्ध करने का प्रयास करते रहे हैं जिसके कारण वे भारतीयों को सभ्य बनाने का प्रयास करते। इसी संदर्भ में T.R. होम्स ने भारतीय स्वतंत्रता के इस संघर्ष को सभ्यता एवं बर्बरता के विरुद्ध संघर्ष घोषित किया।

जातियों का विद्रोह-

एक अन्य प्रसिद्ध विद्वान मीडके ने इस संघर्ष को नस्लीय एवं जातीय आधार देकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पर यह दृष्टिकोण दो रूपों में दिखता है प्रथम यह भारतीय आपसी संघर्ष को बताता है वहीं अन्य ओर गोर और कालों के संघर्ष को संदर्भित करता है। इसी आधार पर मीडले यह सिद्ध करने का प्रयत्न करते रहे हैं कि यह विद्रोह अवश्य ही जातियों के मध्य लड़ा गया विद्रोह था। जिसमें गोरे व काले के बीच संघर्ष हुआ।

प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन -

इसी तरह भारतीय राष्ट्रवादी एवं क्रांतिकारी स्वातंत्र्य वीर सावरकर ने इसे प्रथम स्वतंत्रता घोषित किया। वास्तविक रूप में इस विद्रोह ने एक प्राथमिक चिंगारी के रूप में तो कार्य किया ही साथ ही अन्य आंदोलनों, जो भविष्य में हुए, उन्हें भी दिशा दी। तथा प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के रूप में भूमिका निभाई।

वीर सावरकर वस्तुतः दक्षिण में सक्रिय रहे एक आदर्श क्रांतिकारी एवं राष्ट्रवादी रहे।

वास्तविक स्वरूप -

विभिन्न इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए स्वरूप के आधार पर इसका एक स्वतंत्र स्वरूप प्रस्तुत करना तो जटिल होगा परंतु इसकी आंशिक रूपरेखा तथा अपनी नीतियों के आधार पर इसे स्वतंत्रता आंदोलन का प्राथमिक चरण कहा जा सकता है। इसी आधार पर इसे राष्ट्रीय विद्रोह भी घोषित किया गया है क्योंकि इसमें केवल एक तबका नहीं था बल्कि यह हिंदू-मुस्लिम का मिला-जुला स्वरूप था जिन्होंने इस आंदोलन को न केवल आगे बढ़ाया बल्कि एक नवीन दिशा भी प्रदान की।

उदा. के लिए 1857 में कहीं से झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई युद्ध में सक्रिय थी तो कहीं से मौलवी

Paper Code A 0 5 0 5 0 1 T

अहमदुल्ला ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। जहाँ एक तरफ बहादुरशाह जफर दिल्ली से नेतृत्व कर रहे थे वहीं अन्य ओर वीर कुँवर सिंह जगदीशपुर से।

इस प्रकार यह आंदोलन तत्कालीन भारत का एक प्रमुख परिदृश्य प्रस्तुत करता हुआ, समन्वित संस्कृति का द्योतक बना तथा एक राष्ट्रीय आंदोलन का प्राथमिक चरण के रूप में अपने स्वरूप को प्रस्तुत करता है।

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर क्रमांक- 6

बंगाल का विभाजन -

बंगाल का विभाजन ब्रिटिश अधिकारी एवं वायसराय कर्जन की एक कूटनीतिक उपज थी जिसने 1905 में अपने चतुर एवं दूरदर्शी बुद्धि से बंगाल को दो भागों में बाँट दिया। जहाँ एक ओर बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा थे वहीं अन्य ओर असम के क्षेत्र। इस विभाजन ने अवश्य ही हिंदु मुस्लिम साम्प्रदायिकता के बीज के रूप में कार्य किया क्योंकि कर्जन ने बंगाल का एक क्षेत्र हिंदु बाहुल्य तथा मुस्लिम कमजोर एवं अन्य क्षेत्र मुस्लिम ~~हिंदु~~ बाहुल्य एवं हिंदु कमजोर क्षेत्र में विभाजित कर दिया था इसीलिए यह साम्प्रदायिकता का जन्मदाता सिद्ध हुआ।

इस विभाजन ने ही भारतीयों के भीतर उग्रवादी चेतना की लहर पैदा कर दी जो न केवल तत्कालीन इतिहास को प्रभावित करने वाली थी बल्कि इसने आगे क्रांतिकारी राष्ट्रवाद को भी प्रोत्साहित किया। यही नहीं कर्जन की अन्य नीतियाँ भी विद्रोहकारी थीं उदा० के लिए उसके द्वारा कलकत्ता नगर निगम अधि० तथा विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर भारतीयों की संख्या को सीनेटों में कम करना बंगाल विभाजन रूपी परिणाम के कारणों एवं ब्रिटिश नीतियों में शामिल किया जा सकता है।

Do Not Write anything in this Portion

फिर बंगाल विभाजन ने एक आंदोलन को जन्म दिया जिसे स्वदेशी आंदोलन के नाम से जाना जाता है इस स्वदेशी आंदोलन ने निम्न प्रभाव उत्पन्न किए।

① आयात कर में कमी
② भारतीय उद्योगों में वृद्धि
③ आर्थिक शोषण में कुछ आंशिक कमी

परंतु क्रांतिकारी राष्ट्रवाद, जोकि बंगाल विभाजन के रूप परिणाम के रूप में दिखाई देता है एक प्रमुख विकास के रूप में उभरकर सामने आया।

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का विकास -

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का विकास भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में संकुलता प्राप्ति की ओर अग्रसर होने में प्रयुक्त हथियारों में एक प्रमुख हथियार के रूप में उभरकर सामने आया। इसके विकास को निम्न क्रम में देख सकते हैं -

सूरत की फूट → 1907 में सूरत में होने वाला कांग्रेस का अधिवेशन क्रांतिकारीता की ओर बढ़ने वाला प्रथम प्रयास था। इसमें उग्रवादी और उदारवादियों के बीच फूट उत्पन्न हो गयी।

1908 की घटना -

1908 में खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी ने हार्डिंग के ऊपर बम फेंककर क्रांतिकारी विकास में सहयोग किया। हालाँकि हार्डिंग नहीं मरा परंतु यह आरंभिक कदम स्वरूप था जिसने क्रांति की शुरूआत की।

इन दोनों लोगों को गिरफ्तारी का भी सामना करना पड़ा जिससे और हिंसा का मार्ग भी तैयार हुआ।

बलवंत फड़के की भूमिका -

वासुदेव बलवंत फड़के ने इस क्रांतिकारियों को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई एवं राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन दिया।

काकोरी ट्रेन काण्ड -

1925 में HRA के सदस्यों द्वारा होने वाला काकोरी ट्रेन काण्ड, (जिसमें ब्रिटिश की ट्रेन को लूट लिया गया था, क्रांतिकारिता का एक महत्वपूर्ण उदा॰ प्रस्तुत करती है।

चंद्रशेखर & भगत सिंह की भूमिका -

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद में यदि इन दोनों

Do Not Write anything in this Portion

राष्ट्रवादियों के नाम न लिया जाए तो वह अधूरा राष्ट्रवाद लगता है। इनके नामों के अतिरिक्त अन्य समितियों को भी निम्न रूप में देख सकते हैं.

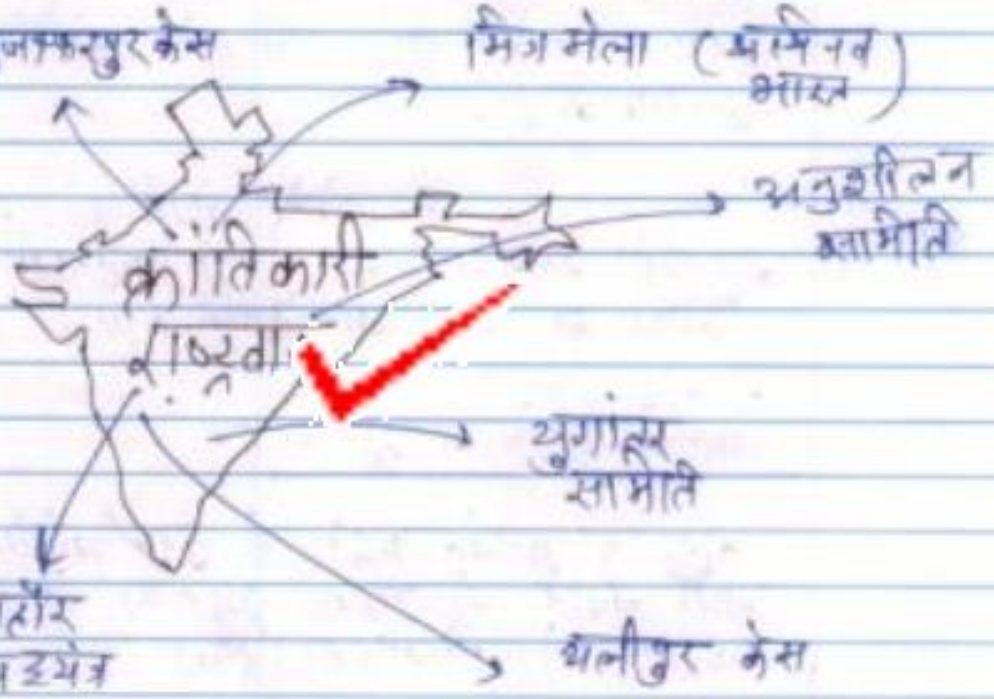

इस प्रकार क्रांतिकारी राष्ट्रवाद ने भारतीय ~~राष्ट्र~~ राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित करने में अहम् भूमिका निभाई। और साथ ही इन समितियों ने भी भारतीयों में निम्न रूप में चेतना व्याप्त की

- राजनीतिक चेतना
- आर्थिक विरोध के विरुद्ध चेतना
- शोषण से मुक्ति की चेतना

Paper Code

X

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

X